TECH mahindra FOUNDATION

साझी समझ 8.0

सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता

Relevance of Regional Languages in the Context of Social Work

कार्यक्रम रिपोर्ट

14 सितम्बर 2022

टेक महिंद्रा फाउंडेशन की एक प्रस्तुति

विषय-सूची

1. टेक महिंद्रा फाउंडेशन के बारे में 01

2. आभार 03

3. सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता: संदर्भ 04

4. आरंभिक उद्बोधन 07

5. मुख्य वक्ता का संबोधन 08

6. पैनल डिस्कशन 09

7. वक्ताओं का प्रोफाइल 13

8. कार्यक्रम की झलकियाँ 14

टेक महिंद्रा फाउंडेशन के बारे में

टेक महिंद्रा फाउंडेशन, टेक महिंद्रा लिमिटेड (Mahindra Group Company) की कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) शाखा है। 2006 में स्थापित फाउंडेशन, सेक्शन 25 कंपनी (कंपनी अधिनियम, 2013 में सेक्शन 8 कंपनी के रूप में संदर्भित) के रूप में, कॉर्पोरेट वॉलीटियरिंग पर ध्यान देने के साथ शिक्षा, रोजगार और दिव्यांगता के क्षेत्रों में अथक प्रयास कर रहा है।

फाउंडेशन के लाभार्थियों में 50% महिलाएँ और 10% दिव्यांग व्यक्ति हैं। विगत वर्षों के सभी कार्यक्रमों में 3,32,732* प्रत्यक्ष लाभार्थियों को प्रभावित किया गया है। इसके अलावा, भारत के 17 राज्यों में हमने 572* कोविड राहत परियोजनाओं के माध्यम से 25 लाख से अधिक लोगों का जीवन प्रभावित किया है।

*31 मार्च, 2022 तक के आँकड़े

हमारे मुख्य कार्य क्षेत्र

रोजगार (Employability)

SMART (Skills-for-Market Training) आर्थिक रूप से पिछड़े शहरी समुदायों के युवाओं को सशक्त बनाने के लिए फाउंडेशन का एक प्रमुख कार्यक्रम 'रोजगार' है। यह प्रशिक्षण (Training) कार्यक्रमों के माध्यम से जरूरी रोजगार योग्यता कौशल प्रदान करता है। यह प्रयास करता है कि प्रशिक्षण के पश्चात् युवाओं को उपयुक्त सम्मानजनक नौकरी प्राप्त हो। फाउंडेशन SMART अकादमियों और केंद्रों का एक नेटवर्क स्थापित करके स्मार्ट कार्यक्रम को लागू कर रहा है – ये कार्यक्रम प्रत्यक्ष (DIP) और अन्य सहयोगी कार्यान्वयन एजेंसियों(PIP) के माध्यम से चलाए जा रहे हैं।

शिक्षा (Education)

फाउंडेशन बच्चों के समग्र विकास के उद्देश्य से **ARISE** (All Round Improvement of School Education) कार्यक्रम के तहत सरकारी स्कूलों में काम करता है। इसके अलावा, शिक्षांतर फाउंडेशन का प्रशिक्षण कार्यक्रम है। यह आधुनिक विषय वस्तु और शैक्षणिक अभ्यासों द्वारा शिक्षक क्षमता संवर्धन पर केंद्रित है। फाउंडेशन में मोबाइल साइंस लैब (Mobile Science Lab) भी लॉन्च की गई है, जहाँ पर्यावरण अध्ययन की व्यावहारिक गतिविधियों की शिक्षा के लिए एक बस, कक्षा 3 से 5 के छात्रों को सीखने की सुविधा प्रदान करने के लिए सरकारी स्कूलों का दौरा करती है।

दिव्यांगता (Disability)

फाउंडेशन का मानना है कि दिव्यांगता में क्षमता है। एक समावेशी दुनिया बनाने, सम्मान और आत्मविश्वास का जीवन प्रदान करने पर ध्यान देने के साथ, हम क्रमशः दिव्यांग बच्चों और युवाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। यह **ARISE+** (All Round Improvement in School Education for Children with Disabilities) और **SMART+** (Skills-for-Market Training for Persons with Disabilities) के माध्यम से किया जाता है। ARISE+ एक ऐसा कार्यक्रम है जो दिव्यांग बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित करता है। SMART+ प्रोग्राम दिव्यांग युवाओं को रोजगार संबंधित अवसर प्रदान करने पर केंद्रित है।

वॉलींटियरिंग (Volunteering)

कॉर्पोरेट वॉलींटियरिंग टेक महिंद्रा फाउंडेशन का केंद्रीय मूल्य है। कर्मचारी स्वेच्छा से सहानुभूति और करुणा के लिए अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के साथ-साथ सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाने में योगदान करते हैं। इस प्रकार हम *#Rise* को कार्यान्वित कर रहे हैं!

कॉन्सेप्ट लीड: चेतन कपूर, सीओओ, टेक महिंद्रा फाउंडेशन

कार्यक्रम समन्वय: विजेन्द्र कुमार राय, लोकेशन हेड, टेक महिंद्रा फाउंडेशन, दिल्ली एनसीआर

मुख्य योगदानकर्ता: साजिद अली, डॉ रमेश तिवारी, शैलजा चौधरी, रुष्पा मित्रा, इमरान अख्तर, सुप्रिया दास, जेरिन थॉमस, मृणाल रोका, हिमांशी धवन, तनिष महेश्वरी, अंजन लोहानी , कुनाल घोष, अर्चना शर्मा, गुलाम मेहदी शाह, पौरवी श्रीवास्तव

TECH
mahindra
FOUNDATION

Citation: टेक महिंद्रा फाउंडेशन (2022)
साझी समझ, "सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता" कार्यक्रम रिपोर्ट

©2022 टेक महिंद्रा फाउंडेशन

इस प्रकाशन की सामग्री का उपयोग केवल अभिस्वीकृति के साथ किया जा सकता है।

प्रकाशन: टेक महिंद्रा फाउंडेशन, हरिजन सेवक संघ परिसर, गांधी आश्रम, किंग्सवे कैंप, नई दिल्ली - 110009

info@techmahindrafoundation.org

www.techmahindrafoundation.org, www.smart-academy.in

आभार

टेक महिंद्रा फाउंडेशन सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी विशेषज्ञों और संस्थाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है, जो सामाजिक विकास के क्षेत्र में निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं।

साझी समझ के इस विषय "सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता" को संकल्पित व अवधारित करने के लिए टेक महिंद्रा फाउंडेशन के सीओओ चेतन कपूर व डीआईपी हेड साजिद अली का विशेष आभार।

हम कार्यक्रम के मुख्य वक्ता नीलेश मिश्रा, परिचर्चा में भाग लेने वाले सभी पैनलिस्ट्स, शारदा गौतम, अमृता शर्मा व अशोक कुमार के आभारी हैं कि वे इस परिचर्चा का हिस्सा बने और अपने मूल्यवान सुझावों को साझा किया। 'स्थानीय भाषाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका' वाली परिचर्चा निश्चित रूप से सभी को जोड़ने में, खासकर सामाजिक क्षेत्र में मदद करेगी।

सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता

(RELEVANCE OF REGIONAL LANGUAGES IN THE CONTEXT OF SOCIAL WORK)

टेक महिंद्रा फाउंडेशन प्रायः प्रत्येक गंभीर मुद्दों पर संवाद का पक्षधर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में, फाउंडेशन ने विभिन्न विषय-विशेषज्ञों की एक श्रृंखला को एक मंच पर लाने एवं शिक्षा, रोजगार, सोशल इमोशनल लर्निंग आदि विषयकेंद्रित चर्चा के लिए कई सेमिनारों की मेजबानी की है। 'साझी समझ' शीर्षक वाले ये कार्यक्रम, भारत में शिक्षक-प्रशिक्षण और शिक्षा के विकास से संबंधित जरूरी मुद्दों पर चर्चा के माध्यम से संवादपरक वातावरण बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास हैं। फाउंडेशन अपने सभी कार्यक्रमों और गतिविधियों के माध्यम से सकारात्मक संवाद की संस्कृति को बढ़ावा देना चाहता है। फाउंडेशन की ओर से साझी समझ 8 का यह आयोजन भी इसी कड़ी में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

इस चर्चा का उद्देश्य निम्नलिखित बिन्दुओं पर समझ बेहतर करना है:

1) सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्या क्षेत्रीय भाषाओँ को पर्याप्त महत्त्व दिया जा रहा है!

2) हिंदी भाषी सामाजिक क्षेत्र में भाषाई संवाद को सम्प्रेषणीयता के स्तर पर सभी के लिए कैसे समान रखा जा सकता है?

3) ज़मीनी कार्यकर्ताओं को नीति-निर्धारण के ताने-बाने से कैसे बेहतर तरीके से जोड़ा जाए?

4) चूँकि प्रौद्योगिकी (Technology) की प्रमुख भाषा अंग्रेज़ी है, तो क्या तकनीकी के बढ़ते प्रभाव के कारण भी हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओँ की भूमिका क्षीण हुई है?

कार्यक्रम के बारे में

14 सितम्बर 2022 को, टेक महिंद्रा फाउंडेशन ने 'साझी समझ' नामक श्रृंखला की आठवीं कड़ी के रूप में विशेषज्ञों से सृजित एक वर्चुअल पैनल डिस्कशन की मेजबानी की। साझी समझ का यह संस्करण - "सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता" विषय पर, हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया था| यह एक जीवंत सभा थी, जो ज़ूम ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर चल रही थी तथा इसे यूट्यूब पर भी अपलोड किया गया है।

कार्यक्रम की रूपरेखा

कार्यक्रम-प्रवाह	विवरण
कार्यक्रम का उद्घाटन	साझी समझ के बारे में कुछ शुरुआती टिप्पणियों के साथ सत्र का परिचय।
टेक महिंद्रा फाउंडेशन के बारे में	टेक महिंद्रा फाउंडेशन पर प्रस्तुति
आरंभिक उद्बोधन	चेतन कपूर
कीनोट एड्रेस	नीलेश मिश्रा
पैनल डिस्कशन	सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता विषय पर विषय - विशेषज्ञ - अशोक कुमार, अमृता शर्मा, कमलेश शर्मा व शारदा गौतम के साथ परिचर्चा।
दर्शकों के प्रश्न	दर्शकों के सवालों पर चर्चा|
धन्यवाद प्रस्ताव	पैनलिस्ट, टीएमएफ प्रबंधन, दर्शकों-श्रोताओं की सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद ज्ञापन।

यह चर्चा दो खंडों में विभाजित थी:

खंड 1 - स्वागत एवं कीनोट एड्रेस

कार्यक्रम समन्वयक - स्वागत : विजेन्द्र कुमार राय, लोकेशन हेड, टेक महिंद्रा फाउंडेशन, दिल्ली

टेक महिंद्रा फाउंडेशन का परिचय : शैलजा चौधरी, फैकल्टी, आईटीईआई-दिलशाद गार्डन, दिल्ली

आरंभिक उद्बोधन : चेतन कपूर, सीओओ, टेक महिंद्रा फाउंडेशन

मुख्य वक्तव्य : नीलेश मिश्रा - पत्रकार, लेखक, कहानी वक्ता, गीतकार व संस्थापक स्लो मूवमेंट, गाँव कनेक्शन

खंड 2 - पैनल डिस्कशन

मॉडरेटर: डॉ. रमेश तिवारी, सीनियर फैकल्टी, आईटीईआई - शक्ति नगर, दिल्ली

पैनलिस्ट:

अशोक कुमार - कार्यकारी निदेशक, डॉ ए वी बालिगा मेमोरियल ट्रस्ट

अमृता शर्मा - सीनियर कंसल्टेंट, स्टार्टअप

शारदा गौतम - नॉर्थ रीजन हेड, टाटा ट्रस्ट

धन्यवाद ज्ञापन : शैलजा चौधरी

चर्चा के मुख्य बिंदु

विजेन्द्र कुमार राय

लोकेशन हेड

टेक महिंद्रा फाउंडेशन-दिल्ली एनसीआर

विजेन्द्र ने सभी का स्वागत किया और ऑनलाइन साझी-समझ चर्चा के लिए कुछ बुनियादी नियम बताए | इसके बाद कार्यक्रम का संदर्भ निर्धारण किया।

क्षेत्रीय भाषाओँ का महत्त्व

भाषा का मनुष्य और समाज से गहरा संबंध है। यह मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। भाषा संप्रेषण का सशक्त माध्यम होने के साथ ही संस्कृति की संवाहक भी होती है। इस दृष्टि से यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण उपकरण है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अधिक व्यवस्थित और श्रेष्ठ सिद्ध करता है।

भाषा को जानना वास्तव में समाज को जानना है। जब हम किसी भाषा की साहित्यिक कृतियों को पढ़ते हैं तो वास्तव में हम उस भाषा को बोलने-सुनने-लिखने-पढ़ने वाले समाज के सामाजिक क्रियाकलापों को पढ़ रहे होते हैं। भाषा का अपना एक समाज होता है। उस समाज का स्वभाव कहीं-न-कहीं भाषा के स्वभाव के रूप में भी दिखाई देता है।

सामाजिक क्षेत्रों में कार्य के दौरान भाषा को लेकर प्रायः दो प्रकार की स्थितियाँ देखने को मिलती हैं। एक भाषा तो वह है जिसमें नीतियाँ-योजनाएँ बनाई जाती हैं और दूसरी भाषा, जो लाभार्थी समूह द्वारा बोली-समझी जाती है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि इन दोनों भाषाओँ के वक्ताओँ के बीच सघन वार्तालाप और सोच-विचार के आदान-प्रदान का विशेष अवसर नहीं मिलता है। नीति-निर्माताओं और लाभार्थियों की भाषाओँ में अंतर होने के कारण अक्सर नीतियों का कार्यान्वयन अधूरा रहता है और हम वास्तविक लाभार्थी तक सुविधाएँ नहीं पहुँचा पाते हैं| यहाँ क्षेत्रीय भाषाओँ का उल्लेख करना और भी आवश्यक हो जाता है, क्योंकि आम नागरिक उस माध्यम को सहज स्वीकार करता है।

इसके बाद विजेन्द्र ने कार्यक्रम की रूपरेखा साझा की और शैलजा चौधरी को टेक महिंद्रा फाउंडेशन के कार्यक्रमों के बारे में बताने के लिए आमंत्रित किया। शैलजा ने टेक महिंद्रा फाउंडेशन के सभी कार्यक्रमों जैसे शिक्षा, रोजगार, दिव्यांगता के बारे में विस्तार से परिचय दिया।

आरंभिक उद्बोधन

चेतन कपूर

सीओओ
टेक महिंद्रा फाउंडेशन

इसके बाद विजेन्द्र ने कार्यक्रम के आरंभिक उद्बोधन के लिए टेक महिंद्रा फ़ाउंडेशन के सीओओ चेतन कपूर को आमंत्रित किया। अपने उद्बोधन का आरंभ चेतन कपूर ने उस विभाजन, या उस विचार-विभिन्नता से किया जो भाषाओँ की असमानता के कारण उपजता है। उन्होंने कहा कि इस असमानता के कई उदाहरण हैं, और इससे जुड़ा एक विरोधाभास भी है - और वह यह है कि, हालाँकि हमारे देश में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएँ बोलने वाली जनसंख्या 90 प्रतिशत से भी अधिक है, पर यदि हम व्यावसायिक भाषा की बात करें, यानी वह भाषा जिसमें पेशेवर या प्रोफेशनल्स बात करना पसंद करते हैं, तो वह अंग्रेजी ही ज़्यादा सुनाई पड़ती है। तो ऐसे लोग जिनका इंग्लिश में हाथ तंग है, चर्चा का हिस्सा बन ही नहीं पाते हैं। जो कि एक विसंगति है, क्योंकि इससे जो भाषायी असमानता है, उसे और बढ़ावा मिल सकता है।

उन्होंने बताया कि पॉलिसी निर्धारण में जमीनी स्तर का प्रतिनिधित्व भी पूरी गरिमा से होना चाहिए, साथ ही यह भी बताया कि सामाजिक क्षेत्र में जो लोग ज़मीनी क्रियान्वन करते हैं, और जो लोग नीति-निर्धारण करते हैं, उनमें भाषा के कारण भी एक फंडामेंटल डिसकनेक्ट, एक बुनियादी विभाजकता सी प्रतीत होती है, जिसको दूर करने की आवश्यकता है। साथ ही साथ इस बात पर भी प्रकाश डाला कि भाषा का मूल उद्देश्य बिना किसी भेद के संवाद और संप्रेषण होना चाहिए।

मुख्य वक्ता का संबोधन

नीलेश मिश्रा

पत्रकार, लेखक, कहानी वक्ता, गीतकार

इसके बाद विजेन्द्र ने कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, नीलेश मिश्रा से संबोधन के लिए निवेदन किया। आपने बताया कि समाज के हर स्तर पर वहाँ की स्थानीय भाषा सभी को जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन समाज में ऐसे लोग भी हैं, जो प्रतिभा के धनी तो हैं पर भाषाई बाधा के चलते हाशिये पर चले गए हैं। ऐसे तमाम लोग हैं जो काम तो बेहतर करना जानते हैं परंतु उन्हें उतना अच्छा प्रस्तुतीकरण किसी प्रोफेशनल/ व्यावसायिक भाषा में नहीं आता, और वे वहीं रह जाते हैं। उन्होंने बताया कि हमारा रोल मॉडल, एक सामान्य चेंज मेकर भी हो सकता है जो कि केवल स्थानीय भाषा ही जानता हो, और उनको आगे लाने में सीएसआर(कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी) क्षेत्र एक महती भूमिका निभा सकता है। उनके अनुसार, अंग्रेजी की खिलाफत करके हिंदी या किसी अन्य भाषा को बढ़ावा देने की आवश्यकता नहीं है, तथा किसी भी स्थिति में भाषा, विकास में बाधा नहीं बननी चाहिए।

पैनल डिस्कशन

कीनोट एड्रैस के बाद पैनल डिस्कशन की शुरुआत करते हुए डॉ. रमेश तिवारी ने सभी विशेषज्ञों का परिचय दिया और उन्हें अपने अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया।

अशोक कुमार झा

कार्यकारी निदेशक
डॉ. ए वी बालिगा मेमोरियल ट्रस्ट

हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ अशोक जी ने भाषा सीखने में परिवेश की विभिन्नता और भूमिका को रेखांकित करते हुए संस्कृति एवं मूल्यों की चर्चा की। भाषा और समाज के अंतः संबंध को स्पष्ट करते हुए आपने सामाजिक कार्य के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा कि सामाजिक कार्य का अधिकतम सरोकार हाशिये पर जीवन जीने वाले समाज से होता है। दो जून की रोटी के लिए संघर्षरत समाज के बीच काम करते हुए मैंने जो देखा और भोगा है उसी आँखन देखी को आप सबसे साझा कर रहा हूँ। सन 2001 मे दिल्ली के यमुना पुश्ता के झुग्गी-झोंपड़ी इलाके में अपने साथियों के साथ किए गए काम से जुड़े अनुभव को आपने साझा किया। अपने साथी सदस्य द्वारा लाभार्थी यानी जिसके लिए काम करने गए थे, से उसकी क्षेत्रीय भाषा में न बात करके अंग्रेज़ी शब्दों में अपनी बात पूछना और उसका अपेक्षित उत्तर न मिलना एक ऐसी घटना बनी जो सामाजिक कार्य में क्षेत्रीय भाषाओं की प्रासंगिकता को प्रमाणित करता है। लाभार्थियों के संपर्क हेतु आधारभूत प्रश्नों से लेकर परियोजनाओं की निर्मिति एवं उनके कार्यान्वयन तक की प्रक्रिया में भाषाई गतिरोध एक प्रमुख पहलू है, जिसका सामना करना सामाजिक कार्य क्षेत्रों की एक बड़ी वास्तविकता है। क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोक्ताओं को बुनियादी रूप से अँग्रेजी के शब्दों के अर्थ समझने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। उनकी आधार भाषा हिन्दी अथवा कोई न कोई क्षेत्रीय भाषा ही होती है। सामाजिक कार्यों में विशेष कर दिल्ली-मुंबई के ऐसे क्षेत्रों में, जहाँ देश के विभिन्न क्षेत्रों से अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं को जानने-बोलने वाले काम करते हैं, उनके साथ हम अपनी भाषा में (न कि उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में) उन पर परियोजनाएँ थोपते हैं, लागू नहीं करते।

नीति-निर्धारण के ताने-बाने से क्षेत्रीय भाषाओं को कैसे जोड़ा जाए? इस प्रश्न के उत्तर में अशोक जी ने अपना पक्ष रखते हुए बताया कि जिनको सबसे ज्यादा महत्त्व देना चाहिए था, उनको नकारने के कारण अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति अभी तक नहीं हो सकी है। नीतियाँ समाज में हाशिये पर जीवन जीने वाले लोगों के लिए बनाई जाती हैं। जबकि इसके निर्धारण में अफसरशाही सोच का दुष्परिणाम यह है कि जिनकी समस्याओं के समाधान के लिए नीतियाँ बनाई जा रही हैं, उनकी सहभागिता है ही नहीं। मेरा स्पष्ट मानना है कि ऐसे लोगों की सहभागिता सुनिश्चित की जाए, उनका क्षमता संवर्धन किया जाए, नीतियों को लागू करने में प्रत्येक स्तर पर ऐसे समाज के प्रतिनिधियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। तभी हम इस लक्ष्य को हासिल कर पाएँगे।

अमृता शर्मा

सीनियर कंसल्टेंट
स्टार्टअप प्रोजेक्ट

आपने फील्ड टीम के साथ के अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि जब भी हमलोगों ने भाषा के मुद्दे पर बातचीत की, उसमें यही निकल कर आया कि क्या हम प्रवासी मजदूरों की समस्याओं को पूरा-पूरा ग्रहण कर अपनी भाषा यानी अँग्रेजी मे उतार पा रहे हैं? यदि नहीं तो क्यों? कई कार्यशालाओं से जुड़े अपने अनुभवों के द्वारा अमृता जी ने शोध के अध्ययन की मूल भाषा अँग्रेजी और लाभार्थियों की भाषा के बीच तालमेल की जरूरत एवं मजदूरों की भाषा में किए गए अपने प्रयासों जैसे लेबर एक्सप्रेस शीर्षक से पर्चा छापने आदि प्रयासों का जिक्र किया और शोध मे भी फोटो वॉइस तथा वीडियो आदि के द्वारा भाषाओं के बीच की दूरी को पाटने के प्रयासों का उल्लेख किया। इसके साथ-साथ अमृता जी ने मजदूरों की भाषा और नीति-निर्धारण की भाषा के बीच के अंतर के कारणों की भी चर्चा की कि आखिर इसके कारण क्या हैं? क्या समय की सीमा है? या एक व्यक्ति के पास अधिक कार्यभार की सीमा है? मजदूर से लेकर डोनर्स तक से संपर्क और प्रोजेक्ट निर्माण आदि सबकुछ यदि एक ही व्यक्ति करेगा तो ऐसी खामियों को भरना मुश्किल होगा। अमृता जी ने आजीविका द्वारा किए गए अपने कार्यों को याद करते हुए भी उनकी पर्याप्तता के प्रति स्वयं से असंतोष जाहिर करते हुए कहा कि अभी भी मन में कहीं-न-कहीं एक कसक है। आपने उन अनुभवों का भी जिक्र किया जिसमें अँग्रेजी भाषा के प्रति आग्रह ने हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में जरूरी दस्तावेजों के प्रकाशन को ही साकार नहीं होने दिया और भाषाओं की यह दीवार निरंतर बड़ी होती गई। उन्होने कहा कि भाषा की बाधा के कारण एक से एक बेहतर सामाजिक कार्यकर्ता मुख्यधारा से कहीं दूर रह गए। भाषाओं की समानता ढूंढते नीति-निर्माताओं के द्वारा उत्पन्न असमानता को रेखांकित करते हुए आपने अपने वक्तव्य को पूर्ण किया।

सामाजिक क्षेत्र में कम्युनिकेशन और परस्पर संवाद के लिए स्थानीय भाषाओं को समानता के स्तर पर कैसे लाएँ? इस प्रश्न के जवाब मे अमृता जी ने आजीविका के साथ किए गए अपने प्रयासों का उदाहरण देते हुए बताया कि जमीनी सच्चाई पूरी तरह कवर हो रही हो और उनकी भाषा में कवर हो रही हो। यह मिशन, परियोजना के रूप में अपनाने की आवश्यकता है। हमने इस प्रकार के कुछ कार्य टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेस और अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर किए हैं। इसके साथ-साथ हमें परस्पर संवाद के इन प्रयासों को भी बनाए रखना होगा जो टेक महिंद्रा फ़ाउंडेशन कर रहा है।

कमलेश शर्मा

आजीविका ब्यूरो

आपने हिन्दी दिवस की शुभकामनाओं के साथ अपने वक्तव्य का आरंभ करते हुए आजीविका के साथ करीब 15-17 वर्ष पुराने अनुभवों को साझा किया। मजदूरों के साथ होने वाली घटनाओं के मद्दे नजर अपने अनुभवों को साझा करते हुए कमलेश जी ने बताया कि भाषाई विविधता की यह दीवार दिनोंदिन बड़ी होती जा रही है। भाषाई समस्याओं के द्वारा और अँग्रेजी भाषा-भाषी मानसिकता के बढ़ते दखल ने इसमें और अधिक मुश्किलें खड़ी की हैं। इसके कारण लाभार्थियों के हित में जमीनी बदलाव अनिवार्य हैं। इस क्षेत्र में हमें निरंतर और आगे बढ़ना है।

प्रौद्योगिकी की भाषा के अँग्रेजी होने के कारण क्षेत्रीय भाषा-भाषियों को होने वाली परेशानियों के उत्तर में कमलेश जी ने बताया कि प्रौद्योगिकी ने हमें यदि कहीं कमजोर किया है तो भाषाई अनुवाद के रूप में सशक्त भी बनाया है। कोविड के दिनों के अनुभवों को साझा करते हुए उन्होंने एक ही पाठ-सामग्री की कई भाषाओं में उपलब्धता के उदाहरण देते हुए इसे प्रमाणित किया|

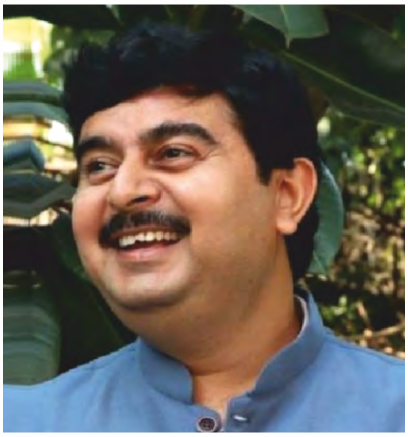

शारदा गौतम

जोनल हेड - नॉर्थ
टाटा ट्रस्ट

शारदा गौतम ने किसानों, कारीगरों आदि के परिवेश से जुड़ी स्थितियों में सामाजिक बदलाव के लिए किए जाने वाले प्रयासों का उदाहरण देते हुए इनमें ज्ञान और दक्षता की आवश्यकता के साथ-साथ उनकी भाषा में उपलब्धता पर ज़ोर दिया, जो लाभार्थी की भाषा है। इस संबंध में निमाड़, महाकौशल और पूर्वी उत्तर प्रदेश में मृत्यु शब्द के लिए प्रयुक्त अलग-अलग शब्दों के उदाहरण से भाषाई विविधता के महत्त्व को आपने बहुत बेहतर तरीके से समझाया। हिंदी और ओड़िया में आलोचना का अलग-अलग आशय स्पष्ट करते हुए भाषा की प्रासंगिकता को शारदा जी ने भली-भाँति स्पष्ट किया। सोशल सेक्टर में क्षेत्रीय भाषाओं के महत्त्व के सवाल पर शारदा जी का मत था कि ज़्यादातर सामाजिक संस्थाएँ क्षेत्रीय भाषाओं को महत्त्व दे रही हैं किन्तु जो विशिष्ट कार्य से जुड़े लोग हैं, उनकी ओर से क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग थोड़ा मुश्किल है। प्रौद्योगिकी की भाषा अँग्रेजी होने के कारण क्षेत्रीय भाषाओं के पिछड़े होने की आशंका संबंधी प्रश्न के जवाब में आपने कहा कि अँग्रेजी विश्व की एक व्यावसायिक भाषा बन चुकी है। अतः यदि हम हिंदी अथवा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को अँग्रेजी के मुक़ाबले देखेंगे तो यह ठीक नहीं होगा। अंग्रेजी के प्रभाव को प्रतिस्पर्धा रूप में न लेकर हमें इसके साथ-साथ अपनी भाषाओं में काम करने की आदत विकसित करनी होगी। अँग्रेजी, हिंदी, ओड़िया में आप हैश टैग आदि के इस्तेमाल से भी अपनी बात कहनी हो तो अवश्य उसका उयोग करें। इस संबंध मे नागालैंड और उड़ीसा में टाटा ट्रस्ट के द्वारा किए गए प्रयासों से कारीगरों के जीवन मे आ रहे बदलावों के उदाहरण देते हुए उन्होंने अपना वक्तव्य पूर्ण किया।

अनुलग्नक

वक्ताओं का प्रोफाइल

कीनोट एड्रेस

नीलेश मिश्रा - पत्रकार, लेखक, कहानी वक्ता , गीतकार

नीलेश मिश्रा एक स्टोरी टेलर, पत्रकार, बॉलीवुड गीतकार, पटकथा लेखक तथा फोटोग्राफर हैं, तथा साथ ही एक सोशल एन्ट्रेप्रेन्योर, मार्केट इनोवेटर भी हैं। कई सुपरहिट हिंदी फिल्मों के गीत और पटकथाएँ भी आपने लिखी हैं। ये मुख्य रूप से अपने रेडियो कार्यक्रम "यादों का इडियट बॉक्स विद नीलेश मिश्रा", साथ ही साथ कहानी एक्सप्रेस, पुराने ख़त, ज़िन्दगी मोबाइल, टर्न स्लो आदि के लिए जाने जाते हैं। इनके अलावा आप भारतीय क्षेत्रीय समाचार पत्र गाँव कनेक्शन, स्लो मूवमेंट, स्लो बाज़ार के भी संस्थापक हैं।

अशोक कुमार झा - कार्यकारी निदेशक, डॉ. ए वी बालिगा मेमोरियल ट्रस्ट

अशोक कुमार, एक पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे लगभग 30 वर्षों से सामाजिक रूप से वंचित जनसमुदाय की बेहतरी के लिए कार्यरत हैं। इन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत एक व्याख्याता के रूप में की थी| इनके द्वारा बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए किया गया सतत प्रयास अपने आप में अनुकरणीय है। साथ ही कम्युनिटी एम्पावरमेंट और सस्टेनेबिलिटी की परियोजनाओं के क्रियान्वयन में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

अमृता शर्मा - सीनियर कंसल्टेंट, स्टार्टअप प्रोजेक्ट

वर्तमान में सीनियर कंसल्टेंट के रूप में, स्टार्टअप नाम की संस्था से जुडी हुई हैं| इन्होंने 'आजीविका ब्यूरो' द्वारा स्थापित सेंटर फॉर माइग्रेशन एंड लेबर का नेतृत्व किया है। टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस, मुंबई और अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ साझेदारी के माध्यम से, फील्ड प्रैक्टिशनर्स के लिए, सीज़नल लेबर और माइग्रेशन संबंधी शैक्षणिक पाठ्यक्रमों का नेतृत्व किया है। रिसर्च, इनकी विधा रही है और अपनी कविताओं तथा लेखों के माध्यम से भी समय-समय पर अपने उदगारों को व्यक्त करती हैं।

शारदा गौतम - जोनल हेड - नॉर्थ, टाटा ट्रस्ट

शारदा जी ग्रामीण प्रबंधन संस्थान (इरमा) से गोल्ड मेडलिस्ट, एनआईटी-सूरत से मैकेनिकल इंजीनियर व वर्तमान में टाटा ट्रस्ट में नार्थ रीजन के हेड हैं। शारदा जी की विशेषज्ञता और रूचि का क्षेत्र ग्रामीण आजीविका है। इनका दृढ़ विश्वास है कि ग्रामीण उत्पादक समूह: 'ग्रामीण गरीबी और ग्रामीण से शहरी प्रवास को हल करने के लिए महत्त्वपूर्ण है'। शिल्प कारीगरों के पोषण और उद्यम निर्माण-कौशल की दृष्टि से इनका योगदान उल्लेखनीय है।

कार्यक्रम की झलकियाँ

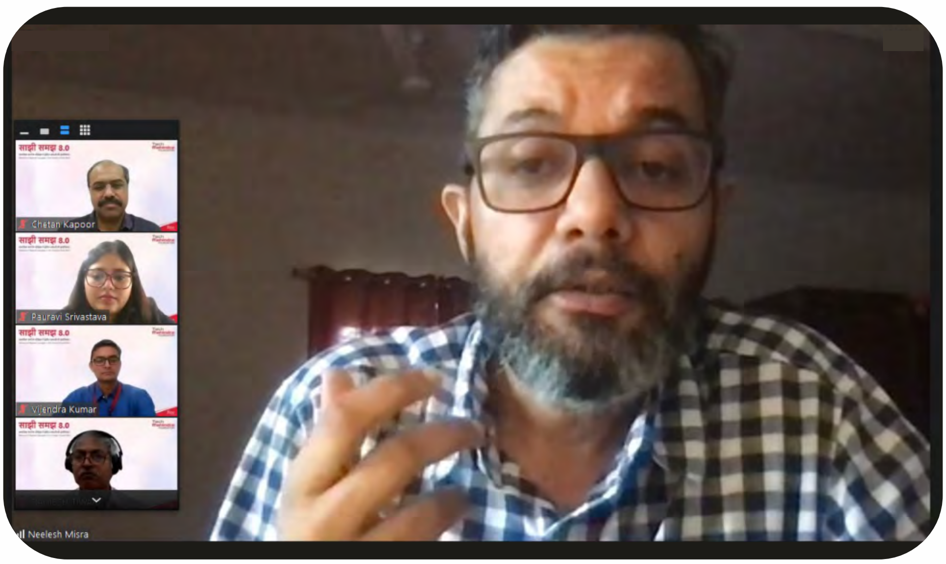

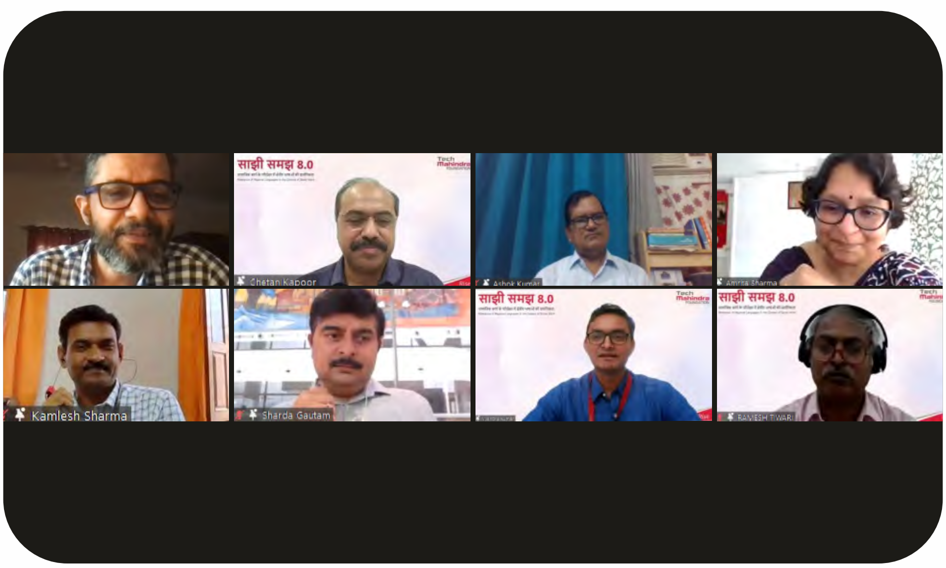

TECH MAHINDRA FOUNDATION

Harijan Sevak Sangh Campus, Gandhi Ashram Kingsway Camp, New Delhi - 110009

Registered Office: Oberoi Gardens Estate, Chandivali, Off Saki Vihar Road Andheri (East), Mumbai - 400072

info@techmahindrafoundation.org

www.techmahindrafoundation.org, www.smart-academy.in